Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

वैश्विक पटल पर हिन्दी के प्रसार में विश्व हिन्दी सचिवालय की भूमिका

Dr. Darshana Devi*

Ph.D. in Hindi

सार – *आज के इस वैज्ञानिक युग में प्रत्येक देश संसार के अन्य देशों से अपने सम्बन्ध स्थापित करने में लगा हुआ है। वैश्वीकरण के इस युग में प्रत्येक देश अन्य दशों से व्यापार, रक्षा, चिकित्सा, शिक्षा आदि क्षेत्रों में सूचनाओं का आदान प्रदान कर रहे हैं। इसलिए प्रत्येक देश अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में अपनी-अपनी भाषा में कार्य करना चाहता है। वर्ष 1991 के बाद जैसे ही भारत सरकार ने अपनी अर्थव्यवस्था को शेष विश्व के देशों के लिए खोला तो अनेक यूरोपीय देशों ने यहां अपना जाल फैलाना आरम्भ कर दिया। आज भारत का विदेशी व्यापार बहुत अधिक बढ़ गया है। जैसे-जैसे शेष विश्व के दशों से हमारा व्यापार बढ़ता गया. हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी का विकास भी उसी के साथ-साथ बढ़ता चला गया। आज संसार के अधिकांश देशों में हिन्दी भाषा के बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। आज चीन, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड, जापान आदि विकसीत देशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार बहुत अधिक बढ़ गया है। संसार के प्रत्येक कोने में हिन्दी भाषी लोग रह रहे हैं। हिन्दी के इस वैश्विक प्रसार में अनेक शैक्षिक संस्थानों, व्यापार केन्द्रों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।*

----------X----------

हिन्दी भाषा को संसार के प्रत्येक कोने में स्थापित करने के लिए भारत सरकार लगातार प्रयासरत रही है। सरकार द्वारा शेष विश्व के देशों में अपनी भाषा को प्रचारित करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। संसार के अनेक देशों के साथ भारत सरकार ने अपने व्यापारिक समझौते के दस्तावेज हिन्दी भाषा में तैयार करवाए गए हैं।

हिन्दी के वैश्विक प्रसार के लिए भारत सरकार ने मॉरिशस सरकार के साथ द्विपक्षीय समझौता किया है। इस समझौते के अनुसार भारत और मॉरिशस सरकार हिन्दी भाषा को अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करने के लिए विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना का प्रस्ताव तैयार किया। विश्व हिन्दी सचिवालय हिन्दी की वैश्विक यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह संस्था 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के मंथन का परिणाम है। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10.14 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में भारत के अतिरिक्त विश्व के 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन में मॉरिशस के प्रधानमंत्री शिव सागर राम गुलाम ने विश्व हिन्दी केन्द्र की स्थापना का प्रस्ताव भारत सरकार के सम्मुख रखा। भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी जी ने इसका समर्थन कर दिया। द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन सन् 1976 में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना के प्रस्ताव को पारित कर दिया। इसके बाद मॉरिशस स्थित भारतीय उच्चायोग के सहयोग से विश्व हिन्दी सचिवालय की ईकाई का गठन कर दिया गया। इसके बाद 20 अगस्त 1999 को भारत सरकार एवं मॉरिशस सरकार ने सचिवालय के उद्देश्यों, संचालन एवं वित्त सम्बन्धी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते के अनुसार मॉरिशस सरकार हिन्दी सचिवालय के लिए भूमि का आंबटन करेगी और भारत सरकार की ओर से भवन के प्रारूप तथा निर्माण की जिम्मेदारी ली गई। 17 दिसम्बर 2001 को विश्व हिन्दी सविचालय का अस्थायी कार्यालय किराए के भवन में आरम्भ किया गया था।

इसके बाद 12 मार्च 2015 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मॉरिशस के प्रधानमंत्री सर अनरूद्ध जगन्नाथ द्वारा विश्व हिन्दी सचिवालय के मुख्यालय निर्माण का शुभारंभ किया गया। दोनों देशों के सहयोग से 13 मार्च 2018 भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी के कर कमलों द्वारा इसका उद्घाटन किया गया। विश्व हिन्दी सचिवालय अधिनियम 2002 के अनुसार इसका मुख्य उद्देश्य

www.ignited.in

हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पदोन्नत करना, संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करना तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी का संवर्धन एवं विकास करना रहा है।

विश्व हिन्दी सचिवालय वैश्विक स्तर पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके साथ-साथ यह अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान भारतीय सभ्यता और संस्कृति का विस्तार में भी लगा हुआ है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी की गतिविधियों का समन्वयन करने के लिए यह संस्थान लगातार प्रयासरत है। शेष विश्व के देशों में हिन्दी शिक्षण प्रशिक्षण का दायरा बढ़ाने, परिमाण एवं गुणवत्ता बढ़ाने के लिए लगातार सहयोग करना, वैश्विक पटल पर हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए कारगर नीतियों का निर्माण, सूचना एवं आधुनिक तकनीकों के माध्यम से हिन्दी से जुड़ी सूचनाओं को विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करना सचिवालय का लक्ष्य रहा है।

प्रशासनिक ढांचा:

विश्व हिन्दी सचिवालय के कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए शासकीय परिषद् तथा एक कार्यकरिणी बोर्ड का गठन किया गया है। इसके अलावा तीन उपसमितियों के गठन एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में एक महासचिव व उनके सहयोग के लिए उपमहासचिव की नियुक्ति का प्रावधान किया है। वर्तमान में इस सचिवालय में तेईस कर्मचारी कार्यरत है।

कार्यक्रम एवं गतिविधियां:-

विश्व हिन्दी सचिवालय वर्ष 2008 से अधिकारिक कार्यारम्भ से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतू नियमित रूप से निर्धारित गतिविधियों का सफल आयोजन कर रहा है। सचिवालय लगातार हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों कवि सम्मेलनों का निरन्तर आयोजन कर रहा है। मॉरिशस में 2008 से सचिवालय एक त्रैमासिक सूचना पर "विश्व हिन्दी समाचार" का प्रकाशन कर रहा है। पूरी दुनियां में हिन्दी भाषा में हुए शोध पत्रों को वर्ष 2009 में प्रतिवर्ष एक शोध पत्रिका "विश्व हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन करता आ रहा है। यह हिन्दी शोध पत्रिका पूरे विश्व के हिन्द प्रेमियों के लिए विचार तथा शोध के आदान-प्रदान के लिए विशेष मंच प्रदान करता है। इस शोध पत्रिका का पूरा रिकार्ड सचिवालय की वेबसाईट पर उपलब्ध है। इसके अलावा हिन्दी सचिवालय विश्व हिन्दी साहित्य पत्रिका का भी भविष्य में प्रकाशन करने की योजना पर कार्य कर रहा है ताकि साहित्य की सभी विद्याओं जैसे कहानी, कविता, नाटक, एंकाकी सहित का प्रकाशन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो सके। हिन्दी सचिवालय द्वारा प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। हिन्दी दिवस के इस पावन अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकारों को आमन्त्रित किया जाता है।

सचिवालय हिन्दी साहित्य सहित अनेक विषयों जनसंचार सूचना-प्रौद्योगिकी, हिन्दी शिक्षण आदि पर सम्मेलनों मॉरिशस व अन्य देशों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का सफल आयोजन भी करता है। सचिवालय भाषाविदों और हिन्दी समाज, स्थानीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संचार अभियानों के लिए सभी के सहयोग मार्गदर्शन व सलाह प्रदान करता है। सचिवालय का एकऑनलाइन डेटाबेस **vishwahindidb.com** भी है जिस पर समस्त विश्व के हिन्दी साहित्यकारों एवं संस्थाओं के बारे विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाता है। इस वेबसाईट पर हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देश-विदेश में प्रचार-प्रसार आदि के बारे में पूर्ण जानकारी समय-समय पर अपडेट की जाती है। भारत एवं मॉरिशस के राष्ट्रीय आन्दोलनों में अनेक कवियों एवं साहित्यकारों का बहुत अधिक योगदान है। हिन्दी के अनेक साहित्यकारों ने अपनी कविताओं, कहानियों एवं उपन्यासों के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलनों में नई चेतना पैदा कर दी थी। विश्व हिन्दी सचिवालय देश के स्वाधीनता आन्दोलन में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में जिन कवियों एवं लेखकों का योगदान रहा है, उन सभी के स्मारक बनाने का प्रस्ताव के साथ-साथ हिन्दी संग्राहलय के निर्माण का प्रस्ताव भी रखा है। इसके अलावा पूरे विश्व में हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सचिवालय ऑनलाइन एवं दूरस्थ पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु अध्ययन केन्द्रों की स्थापना, विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिन्दी शिक्षण की मानक सामग्री-निर्माण में भी सहयोग करता है। इसके साथ-साथ सचिवालय विश्व की अन्य भाषाओं में प्रकाशित ज्ञान को संचय करके उसका हिन्दी में अनुवाद भी करवाने में सहायता करता है।

वैश्विक पटल पर हिन्दी की वर्तमान स्थिति:

महात्मा गांधी हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा एवम् विश्व हिन्दी सचिवालय व हिन्दी प्रचारणी सभा व अन्य संस्थाओं के कारण आज हिन्दी पूरे विश्व की भाषा बन चुकी है। संसार के प्रत्येक कोने में आज हमारी हिन्दी भाषा चमक रही है। कनाडा के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री सरन घई के अनुसार आज दुनिया के यदि एक कोने में हिन्दी, भाषी जाग रहे है तो दूसरे कोने में सोए हुए हैं। आज संसार के अधिकांश देशों में हिन्दी भाषा को बोलने-लिखने एवं समझने वालों की संख्या

दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वैश्विक पटल पर आज हिन्दी भाषा मॉरिशस सूरीनाम, टौबेगो, त्रिनीडाड़, नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान आदि देशों में आधे से अधिक जनसंख्या द्वारा बोली एवं समझी जाती है। विदेशों में आज 90 से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं स्कूलों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है। आज फिजी में 44 प्रतिशत लोग मानक हिन्दी भाषा का प्रयोग पाठशाला, शादी, पूजा एवं प्रार्थना सभा आदि सभी अवसरों पर किया जाता है। नेपाल की 70 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दी बोलती, एवं समझती है। हमारे पड़ोसी देश श्री लंका में रेडियो पर भारतीय शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते है। श्रीलंका के विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी का प्रचलन दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सर्वप्रथम येन विश्वविद्यालय में 1815 से हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था आरम्भ कर दी थी। आज अमेरिका में लाखों प्रवासी भारतीय रह रहे हैं वे सब भी वहां हिन्दी अपनी भाषा को प्रचारित कर रहे है। आज अमेरिका के 30 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। संयुक्त अरब अमीरात, रूस, गुयाना में भी बहुत अधिक प्रवासी भारतीय वहां रहकर हिन्दी भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं। आज, फ्रांस, इटली, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, नार्वे, जर्मन, हंगरी आदि अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन-पाठन की व्यवस्था है। कनाड़ा एवं इग्लैंड में अनेक उत्तर भारत के निवासी रह रहे है। वहां अनेक हिन्दी साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा हिन्दी को प्रचारित कर रहे हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि आज हिन्दी भाषा वैश्विक पटल पर दिन दुनी रात चैगुनी उन्नति कर रही है। हिन्दी भाषा के इस वैश्विक प्रसार में विश्व हिन्दी सचिवालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हिन्दी सचिवालय अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ मिलकर हिन्दी प्रचार-प्रसार मे लगातार कार्य कर रहा है। इसी के परिणाम स्वरूप आज हिन्दी भाषा वैश्विक पटल पर चमक रही है।

विशेष सन्दर्भ:

1. मॉरिशस का हिन्दी साहित्य
2. स्मारिका पत्रिका
3. गंगाचल पत्रिका
4. वैश्विक पटल पर हिन्दी भाग-1 साहित्य संचय प्रकाशन- नई दिल्ली
5. विश्व हिन्दी सचिवालय वेबसाईट
6. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

Corresponding Author

Dr. Darshana Devi*

Ph.D. in Hindi

narender.vats85@gmail.com